जन्म कल्याणक – इंद्रसभा

सौधर्म इंद्र द्वारा मंगलाचरण .....

हे पुरूपार्थ सिद्धि के साधक, धन्य धन्य है तेरा आतम।
आत्म साधना पूर्ण करो तुम, प्राप्त हुआ है दुर्लभ नर तन।।
देह रहित चैतन्य राज का, लेकर परिणति में आलम्बन।
बन जाओ जिनराज शीघ्र अब, तुमको मेरा शत शत वंदन।।

सौधर्म इंद्र

हे देवों! परम पवित्र वीतरागी जैनधर्म के प्रताप से हम सबको यह देव पर्याय मिली है और इस पर्याय में ही हम मध्य लोक के ढाई द्वीपों में होने वाले अनेक तीर्थंकर भगवन्तों के कल्याणक मनाते हैं। आज भी मुझे ऐसा लग रहा है कि अब पुनः हमें तीर्थंकर के जन्म कल्याणक मनाने का सौभाग्य प्राप्त होने वाला है।

शची इंद्राणी

हाँ देव! आपकी बात सत्य है। मेरी आयु कम है, तथापि मुझे अनेक बाल तीर्थंकरों को गोद में लेने का महान सौभाग्य प्राप्त होता है। अदेह स्वभावी भगवान आत्मा की साधना करने वाले देहधारी तीर्थंकर भगवन्तों के शरीर का स्पर्श करने मात्र से हमारी स्त्री पर्याय भी धन्य हो जाती है और हमें भी शुद्धात्मा की साधना की प्रेरणा प्राप्त होती है।

देवी क्रमांक 2 का प्रश्न

हे नाथ! हम सब तीर्थंकर भगवान के कल्याणक मनाते हैं, परंतु कल्याणक का क्या अर्थ है – कृपया स्पष्ट करें?

देव क्रमांक 2 का उत्तर

हे देवी! जो आत्मा के कल्याण में निमित्त हो, उसे कल्याणक कहते हैं। निश्चय से सम्यक् रत्नत्रय ही कल्याणक है। तीर्थंकर भगवान के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान तथा मुक्ति के निमित्त से हमें भी रत्नत्रय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है, अतः ये भी व्यवहार से कल्याणक कहलाते हैं।

देवी क्रमांक 3 का प्रश्न

हे स्वामी! आत्मा के कल्याण का क्या आशय है?

देव क्रमांक 3 का उत्तर

हे देवी! तीर्थंकर भगवन्तों के कल्याणकों को देखकर किसी भव्य जीव को चैतन्य की अपार महिमा भासित होती है। अपनी दृष्टि में अपने अपने निज चैतन्य की महिमा भासित होना, यही अपना कल्याण है।

देवी क्रमांक 4 का प्रश्न

हे नाथ! क्या चैतन्य–साधना तीर्थंकर प्रकृति के बन्ध का कारण है?

देव क्रमांक 4 का उत्तर

नहीं देवी! चैतन्यस्वभाव की साधना मुक्ति का ही कारण है परन्तु जब तक शुद्धत्मा का पूर्ण अवलम्बन नहीं होता, तब तक कमजोरी के कारण साधक की भूमिका में शुभ भाव आये बिना नहीं रहता। इसी शुभभाव से किसी विषेश जीव को तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध होता है।

देवी क्रमांक 5 का प्रश्न

हे देव! तीर्थंकर प्रकृति बांधने वाला यह शुभ भाव भी आदरणीय है या नहीं?

देव क्रमांक 5 का उत्तर

नहीं देवी! जिस भाव से तीर्थंकर प्रकृति बँधती है, वह भाव भी बन्ध का ही कारण है, अतः वह भी दुःख रूप ही है। इसलिए आदरणीय कैसे हो सकता है? आदरणीय तो एक चैतन्यरूप भगवान आत्मा ही है।

देवी क्रमांक 6 का प्रश्न

अहो! मध्यलोक में तीर्थंकर के जीव का जन्म होने पर हमारा यह स्वर्ग भी गौरवान्वित हो गया है क्योंकि वह जीव इस लोक से ही वहां गया है।

देव क्रमांक 6 का उत्तर

अरे देवी! स्वर्ग की तो बात ही क्या, नरकों में भी कुछ क्षणों के लिये शान्ति का वातावरण हो जाता है और तीर्थंकर की महिमा जानकर अनेक भव्य जीव सम्यक्त्व प्राप्त कर लेते हैं।

देवी क्रमांक 7 का प्रश्न

अहा! जिसके पुण्य का वैभव ही इतना अलौकिक है तो उनके आत्मा के वैभव की क्या बात होगी?

देव क्रमांक 7 का उत्तर

हाँ प्रिये! जो पर्याय आत्मा के वैभव को जानकर, उसमें समर्पित होती है वह पर्याय भी स्वयं भगवान बन जाती है।

देवी क्रमांक 8 का प्रश्न

हे देव! क्या शुभ राग मुक्ति के मार्ग में सहायक भी नहीं है?

देव क्रमांक 8 का उत्तर

देखो देवी! राग को अच्छा मानना और उसके फल में रूचि रखना तो मिथ्यात्व है। वास्तव में जिसे पुण्य की रूचि है, उसे जड़ की रूचि है; उसे चैतन्यस्वरूप आत्मा की रूचि ही नहीं है।

देवी क्रमांक 9 का प्रश्न

अहा! इस अद्भुत आत्म–वैभव को अनुभव पूर्वक जानने मात्र से बन्धन की बेंड़ियाँ टूटने लगती हैं।

देव क्रमांक 9 का उत्तर

हाँ! यह आत्मा, आश्रवों को अपवित्र, स्वभाव से विपरीत और दुःख का कारण जानकर तथा अपने आत्मा को पवित्र चैतन्यस्वभावी और सुखस्वरूप जानकर आश्रवों से निवृत्त हो जाता है।

देवी क्रमांक 10 का प्रश्न

हे नाथ! जब आत्मा शरीर और रागादि से भिन्न है तो तीर्थंकर देव की स्तुति में उनके शरीर का वर्णन क्यों किया जाता है?

देव क्रमांक 10 का उत्तर

सुनो प्रिय! व्यवहारनय,शरीर और आत्मा को एक कहता है; इसलिए शरीर से वर्णन करने को "तीर्थंकर देव की व्यवहार स्तुति" कहा जाता है। परंतु व्यवहार तो उपचार मात्र है, यथार्थ नहीं; अतः निश्चय से शरीर का वर्णन करना, भगवान की सच्ची स्तुति नहीं है, निश्चय स्तुति नहीं है।

देवी क्रमांक 11 का प्रश्न

हे स्वामी! केवली भगवान की सच्ची स्तुति कैसे हो सकती है?

देव क्रमांक 11 का उत्तर

सुनो देवी! ज्ञान स्वभावी आत्मा को द्रव्य इन्द्रिय भाव इन्द्रिय और इन्द्रियों के विषयों से भिन्न जानना ही भगवान की सच्ची स्तुति है। ऐसी स्तुति करने वाला ही मुक्ति प्राप्त करता है।

देवी क्रमांक 12 का प्रश्न

हे देव! मुक्ति प्राप्त करने के लिये सबसे पहले क्या करना चाहिये?

देव क्रमांक 12 का उत्तर

हे प्रिये! जैसे, धन कमाने का लोभी पुरूप, सबसे पहले धनवालों को जानकर, उनकी श्रद्धा करके, उनका अनुसरण करता है; उसी प्रकार मोक्षार्थी को सबसे पहले अपने जीवराजा को जानकर, उसकी श्रद्धा करके उसी में लीनता करनी चाहिए। इस उपाय से मुक्ति की प्राप्ति होती है और किसी उपाय से नहीं।

देवी क्रमांक 13 का प्रश्न

हे स्वामी! आत्मानुभूति से पूर्व का पुरूषार्थ किस प्रकार होता है?

देव क्रमांक 13 का उत्तर

सुनो प्रिये! आत्मा की अनुभूति के लिये सबसे पहले स्व और पर के स्वरूप का भेद विज्ञान करना चाहिए। शरीर और रागादि से भिन्न अपना चैतन्य स्वरूप जानने पर, पर–पदार्थों का भी विचार छुटकर, केवल निज स्वरूप का ही विचार रहता है। उस समय "मैं चिदानंद हूँ, शुद्ध हूँ, सिद्ध हूँ" इत्यादि विचार होने पर सहज ही आनंद तरंगें उठती हैं और रोमांच हो जाता है, उसके बाद ऐसा विचार भी छूट जाता है और केवल चिन्मात्रस्वरूप ही भासित होने लगता है।

देवी क्रमांक 14 का प्रश्न

हे नाथ! क्या यह रोमांच ही निर्विकल्प अनुभूति है?

देव क्रमांक 14 का उत्तर

नहीं प्रिये! इस चिन्तन में जो अतीन्द्रिय आनंद तरंगें उठती हैं, वह निर्विकल्प अनुभूति का आनंद नहीं है; लेकिन रोमांच तो स्वभाव की तरफ से उल्लास का विकल्पात्मक आनंद है।

देवी क्रमांक 15 का प्रश्न

हे स्वामी! तो फिर निर्विकल्प अनुभव का आनंद कैसा होता है?

देव क्रमांक 15 का उत्तर

सुनो प्रिये! स्वभाव की तरफ से अतिशय प्रेम के कारण मुमुक्षु को आत्मा के असंख्य प्रदेशों में रोमांच हो जाता है, उसके बाद चैतन्यस्वभाव के रस की उग्रता होने पर विकल्प भी छूट जाता है और परिणाम अर्न्तमग्न होने पर केवल चिन्मात्रस्वरूप भासित होता है; सभी परिणाम स्वरूप में एकाग्र होकर वर्तते हैं, उपयोग स्वानुभव में प्रवर्तता है – इसी का नाम निर्विकल्प अनुभव है। वहाँ दर्शन–ज्ञान–चारित्र या नय–प्रमाणादि का कोई विचार नहीं रहता।

देवी क्रमांक 16 का प्रश्न

अहो! यह निर्विकल्प अनुभव! यह शुद्ध अनुभव! वाह! कैसी अनुपम चीज है! कितनी आलोकिक है यह अन्तरंग दशा!! लेकिन हे देव! हमारी तो जिज्ञासा ही शान्त नहीं होती।

देव क्रमांक 16 का उत्तर

हाँ देवी! तुमने ठीक कहा। निर्विकल्प अनुभव का पूरा कथन करने की ताकत वाणी में है ही नहीं। यद्यपि ज्ञान में इसको जानने की ताकत है, वह अन्तर के वेदन में आता भी है, परन्तु वाणी में उसका पूरा कथन नहीं आता। अरे! जो विकल्प के भी गम्य नहीं हो सकता – ऐसा निर्विकल्प अनुभव तो स्वानुभव गम्य है, गूँगे मनुष्य के स्वाद के समान है।

शची इन्द्राणी

अहा! स्वानुभव की ऐसी चर्चा सुनने का अवसर भी बड़े भाग्य से मिलता है। धन्य हैं वे जीव, जो प्रीतिपूर्वक स्वानुभव की चर्चा भी करते हैं। जिसकी चर्चा इतनी सुन्दर है, वह कितना सुन्दर होगा। अरे! यह तो स्वानुभव गम्य है। यह चर्चा सुनकर मैं सचमुच रोमांचित हो गयीं हूँ और यह रोमांचक आनान्द, वह शीघ्र ही विलीन होकर अतीन्द्रिय आनंद की तरंगें उछलने वाली हैं।

अचानक मंगल घण्टनाद बजने लगते हैं और तेज प्रकाश हो जाता है, इन्द्र का सिंहासन कम्पायमान होता है।

सौधर्म इन्द्र

अरे! यह इन्द्रासन अचानक क्यों डोल रहा है? मेरे इस सिंहासन को हिलानेवाला इस जगत् में कौन है? यह मधुर घण्टनाद क्यों हो रहा है? और सभी दैवीय वाद्य क्यों बज रहे हैं? यह दिव्य प्रकाश क्यों फैल रहा है? शायद कोई आश्चर्यजनक और आनन्दकारी घटना हुई है।

तब सौधर्म इन्द्र अवधिज्ञान से जानकर खड़े होकर बोलते हैं।

सौधर्म इन्द्र

अहो, आनन्द! आनन्द!! अरे देवों, सुनो! मध्यलोक में जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की शौरीपुर नगरी में माता शिवा देवी के उदर से बाईसवें तीर्थंकर नेमिकुमार का जन्म हो चुका है। बोलिए! बाल तीर्थंकर नेमिकुमार की जय!!

सौधर्म इन्द्र सहित सभी इन्द्र इन्द्राणीयाँ मंच के बीच में आकर जनता के सामने घुटने टेककर शिशु तीर्थंकर को परोक्ष नमस्कार करते हैं।

सभी देव

उच्च स्वर में

धन्य हो नाथ! आप धन्य हो! आपका जन्म तीन लोक के लिए कल्याणकारी है। हम सब आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं।

सौधर्म इन्द्र

अब हम सबको बालक नेमिकुमार का जन्मकल्याणक महोत्सव मनाने के लिए शौरीपुर नगरी की ओर प्रस्थान करना चाहिए तथा यहाँ जन्मकल्याणक संबंधी नृत्य आदि का आयोजन किया जाये।